पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत मजदूरी का निर्धारण
(Wage Determination Under Perfect Competition)

मजदूरी के आधुनिक सिद्धांत में पूर्ण प्रतियोगिता में मजदूरी दर का निर्धारण होता है। अतः इस सिद्धांत को पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत मजदूरी का निर्धारण भी कहा जा सकता है। पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत किसी निश्चित समय पर सब फर्मों के लिए मजदूरी की दर दी हुई होती है जिसे माँग वक्र (Demand curve) तथा पूर्ति वक्र (Supply curve) निर्धारित करते हैं। इस प्रकार मजदूरी की वर्तमान दर पर फर्म के लिए श्रम (Labour) का पूर्ति वक्र पूर्ण लोचदार होता है। फर्म के लिए (Equilibrium point) संतुलन बिन्दु वह होगा जहाँ सीमांत आगम उत्पाद वक्र (MRP- Marginal Revenue Product) श्रम के क्षैतिज पूर्ति वक्र को काटता है। पूर्ण संतुलन के लिए यह आवश्यक है कि औसत मजदूरी सीमांत मजदूरी के बराबर हो।

पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect Competition) के अंतर्गत मजदूरी निर्धारण करते समय हम यह मान कर चलते हैं कि श्रम बाजार (Labour Market) में ही बल्कि वस्तु बाजार में भी पूर्ण प्रतियोगिता का प्रचलन होता है। Demand और Supply के प्रतिच्छेदन के फलस्वरूप जब एक बार उद्योग द्वारा मजदूरी निर्धारित हो जाती है तो इसे व्यक्तिगत फर्म को स्थानांतरित कर दिया जाता है जो इसे स्वीकार करती है। यही कारण है कि फर्म की wage line क्षैतिज सीधी रेखा (Horizontal) होती है।

इसे एक चित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं:-

Diagrammatic Representation:-

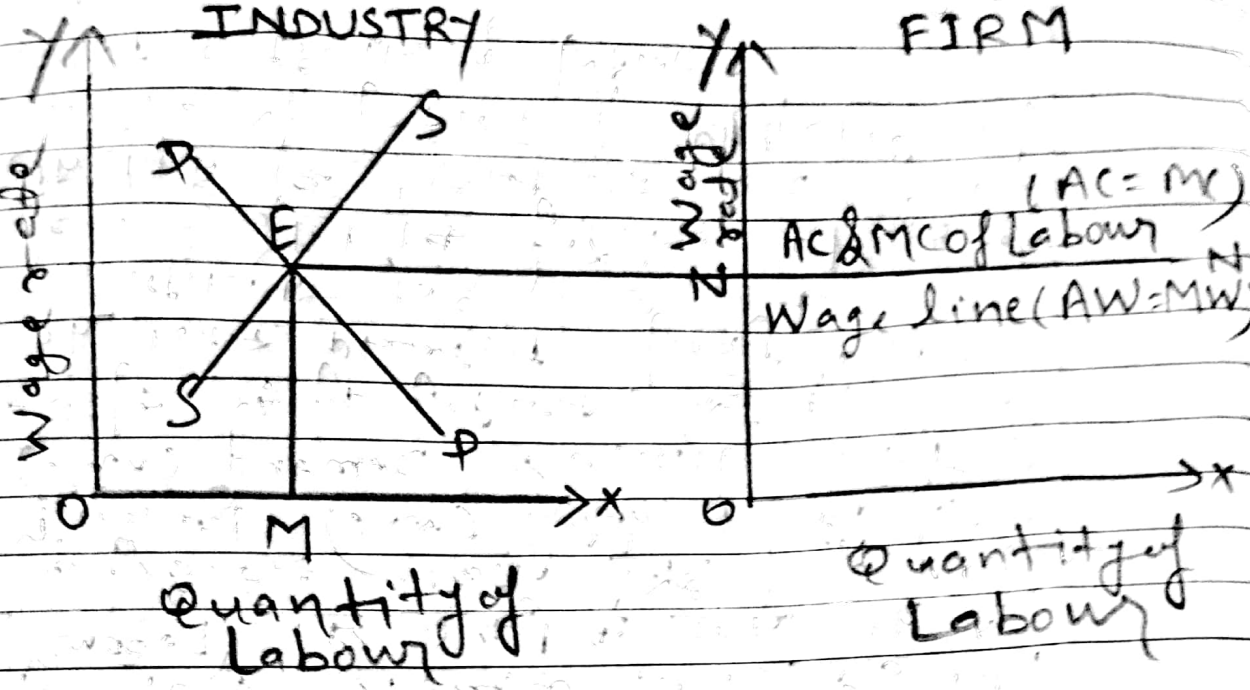

Explanation:- संलग्न चित्र में EM उद्योग द्वारा निर्धारित मजदूरी है। इसे फर्म का स्थानान्तरित कर दिया गया है, जिसे फर्म को स्वीकारना ही पड़ता है। क्योंकि यह फर्म हजारों में से एक है और कुल श्रम-शक्ति का केवल छोटा सा अंश ही नियोजित करती है। अतः यह फर्म बाजार में प्रचलित मजदूरी को प्रभावित नहीं कर सकती है।

रेखाचित्र में क्षैतिज रेखा NN श्रम की औसत लागत/मजदूरी तथा सीमांत लागत/मजदूरी को व्यक्त करती है। पूर्ण प्रतियोगिता के अंतर्गत दीर्घकाल में किसी वस्तु की कीमत उसकी औसत एवं सीमांत उत्पादन लागत बराबर होती है। इसी प्रकार श्रम की मजदूरी दीर्घकाल में उसके औसत एवं सीमांत उत्पादों के बराबर होती है।

Scanned with CamScanner

दीर्घकाल (Long run) में फर्म न तो हानि उठाती है और न ही लाभ कमाती है। इस अवधि में फर्म को केवल सामान्य लाभ ही प्राप्त होता है। लेकिन अल्पकाल में फर्म को या तो लाभ होगा या हानि या सामान्य लाभ भी हो सकता है।

In Short run →

(i) हानि होने पर :— औसत मजदूरी श्रम के औसत आगम उत्पाद से ऊँची हो सकती है। ऐसी स्थिति में श्रम को नियोजित करके फर्म हानि उठायेगी।

Diagrammatic Representation →

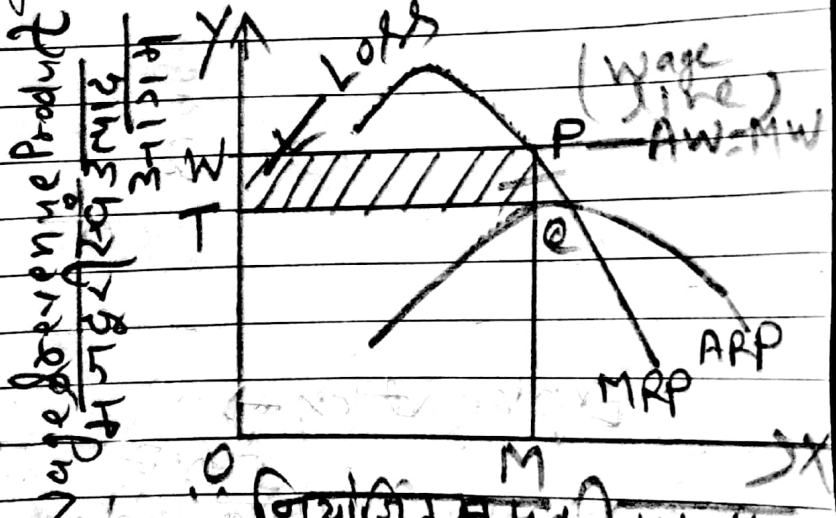

Explanation:— संलग्न चित्र में फर्म उस समय संतुलनावस्था को प्राप्त होती है जब वह श्रम की OM इकाइयों को नियोजित करती है क्योंकि नियोजन के इस स्तर पर सीमांत मजदूरी PM सीमांत आगम उत्पाद MRP के बराबर होती है लेकिन इस नियोजन स्तर पर औसत मजदूरी PM श्रम के औसत आगम उत्पाद QM से अधिक होती है अतः फर्म को WTQP के बराबर net loss उठाना पड़ता है।

(ii) लाभ होने पर → औसत मजदूरी श्रम के औसत आगम उत्पादन से कम हो सकती है। ऐसी स्थिति में श्रम को नियोजित करने वाली फर्म अतिरिक्त लाभ कमायेगी। इसे हम चित्र द्वारा स्पष्ट कर सकते हैं →

Diagrammatic Representation:-

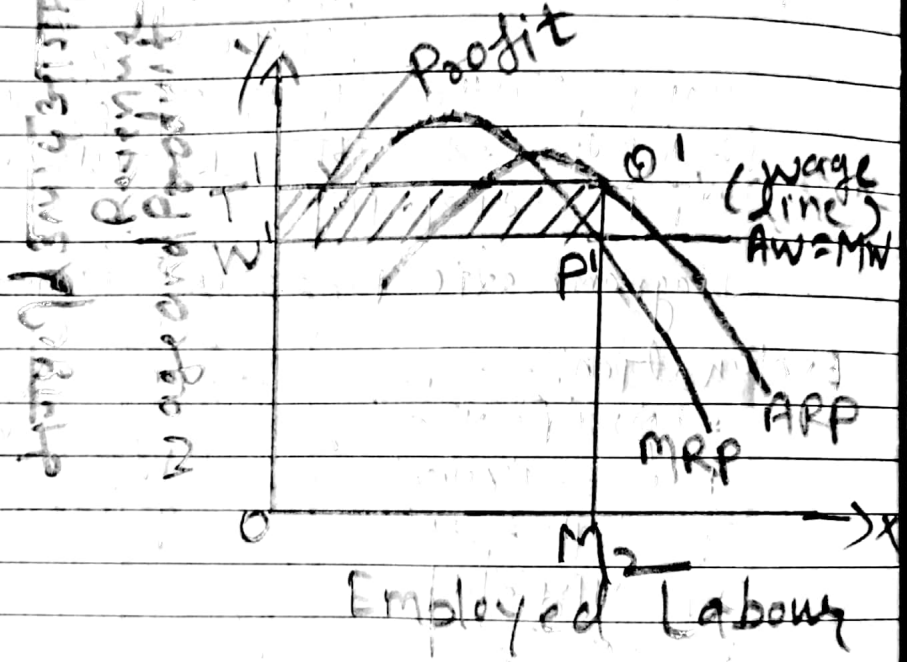

Explanation →
चित्र में श्रम का औसत आगम उत्पाद ($Q'M_2$) औसत मजदूरी ($P'M_2$) से अधिक है। $Q'P'$ इन दोनों का अंतर है। अतः फर्म को $T'W'P'Q'$ के बराबर net profit होगा।

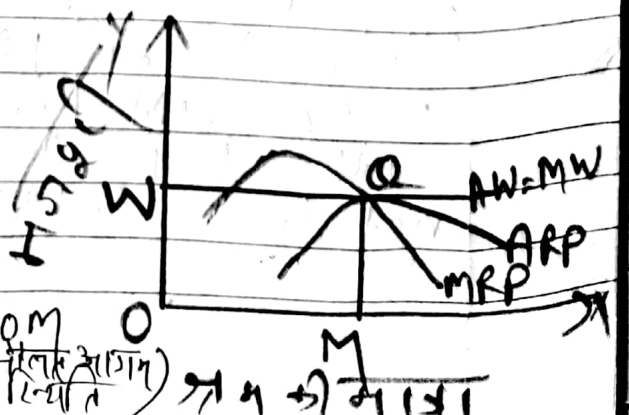

(iii) सामान्य लाभ होने पर →

Explanation:-
इस दशा में चित्र में फर्म का संतुलन बिन्दु Q पर है जहाँ मजदूरी दर = OW
प्रयोग की गई श्रम की मात्रा = OM
यहाँ AW = ARP (औसत मजदूरी = औसत आगम)
अर्थात् सामान्य लाभ की स्थिति

In Long Run:- पूर्ण प्रतियोगिता में दीर्घकाल में हमेशा फर्म को सामान्य लाभ (Normal Profit) की प्राप्ति होता है। क्योंकि दीर्घकाल में सदैव औसत मजदूरी (AW- Average Wage), औसत आगम उत्पादकता (ARP- Average Revenue Product) के बराबर होती है।

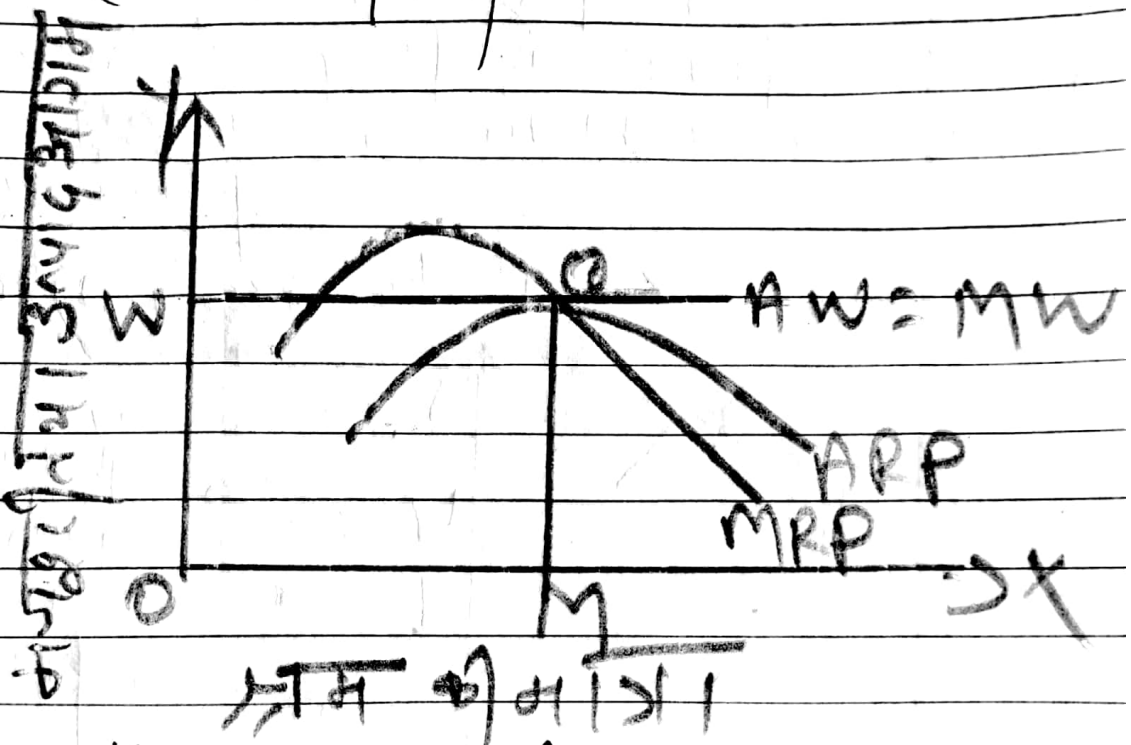

श्रम की मात्रा

संतुलन चित्र में Q बिन्दु ही सामान्य लाभ की स्थिति में संतुलन बिन्दु/ Equilibrium point है।

Scanned with CamScanner